साहित्यशास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता

-प्रो. वीरसागर जैन

साहित्य को समझने के लिए साहित्यशास्त्र का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है | आवश्यक क्या, अनिवार्य ही है | जो लोग अलंकार, रस, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य रूप साहित्यशास्त्र को नहीं जानते हैं, वे साहित्यिक कथनों का समीचीन आशय नहीं समझ पाते हैं और कुछ का कुछ अर्थ ग्रहण करके एक अजीब-सी हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न कर देते हैं | उदाहरणार्थ कथा-साहित्य के कतिपय निम्नलिखित कथनों पर ध्यान दीजिए, जो वस्तुतः शब्द की लक्षणा या व्यंजना शक्ति की अपेक्षा किये गये उच्च कोटि के लाक्षणिक/ साहित्यिक/ आलंकारिक प्रयोग हैं, परन्तु प्रायः लोग उन्हें अभिधारूप में ही ग्रहण करके अपने अज्ञान का परिचय देते हैं | यथा-

1. **नाग का हार और हार का नाग बनना-** कहा जाता है कि सोमा सती को उसकी सास ने घड़े में रखकर एक विषैला नाग भेजा, किन्तु जब सोमा ने उसे देखा-पहना तो वह सुन्दर हार बन गया | इसके बाद उसकी सास ने उससे वह हार वापिस लेकर स्वयं पहनना चाहा तो वह हार सास के हाथों में जाते ही विषैला नाग बन गया | इस बात को प्राय: लोग ऐसी की ऐसी ही अभिधा रूप में घटित हुई घटना मानते हैं, किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है | यह तो एक लाक्षणिक प्रयोग है | तदनुसार यहाँ 'हार' शब्द का लाक्षणिक अर्थ यश, कीर्ति, ख्याति का हेतु बनना है और 'नाग' शब्द का अर्थ अपयश, अपकीर्ति, मृत्यु का हेतु बनना है |
2. **शूली का सिंहासन बनना-** कहा जाता है कि सुदर्शन सेठ को राजा ने शूली पर चढ़ा दिया था और शूली सिंहासन बन गई थी | इसे भी प्रायः लोग ऐसी की ऐसी ही अभिधा रूप में घटित हुई घटना मानते हैं, किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है | यह भी एक लाक्षणिक प्रयोग है | तदनुसार यहाँ 'शूली' का अर्थ है मृत्युदंड और 'सिंहासन' का अर्थ है सम्मान, पुरस्कार, सुकीर्ति |
3. **तलवार का पुष्पहार बनना-** अनेक कहानियों में ऐसा आता है कि किसी पापी ने धर्मात्मा मुनिराज आदि पर तलवार से प्रहार किया परन्तु वह पुष्पमाला बन गई | इसको भी प्रायः लोग ऐसी की ऐसी ही अभिधा रूप में घटित हुई घटना मानते हैं, किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है | यह भी एक लाक्षणिक प्रयोग ही है | तदनुसार यहाँ 'पुष्पहार' शब्द का लाक्षणिक अर्थ यश, कीर्ति, ख्याति का हेतु बनना है |
4. **शिवपिण्डी फटकर चन्द्रप्रभ प्रकट होना-** आचार्य समन्तभद्र की कहानी में आता है कि उन्होंने शिवपिण्डी को फोड़ दिया था और उसमें से चन्द्रप्रभ को प्रकट कर दिया था | इसको भी प्रायः लोग ऐसी की ऐसी ही अभिधा रूप में घटित हुई घटना मानते हैं, किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है | यह भी एक लाक्षणिक प्रयोग ही है | तदनुसार इसका अर्थ कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य समन्तभद्र ने राजा को, जो कि कट्टर शिवभक्त था, ऐसा उपदेश दिया कि उसने शैव धर्म को त्यागकर जैन धर्म अपना लिया और इसी बात को जनता ने कहा कि आचार्य समन्तभद्र ने तो शिवपिण्डी को फोड़कर चन्द्रप्रभ प्रकट कर दिये | चन्द्रप्रभ इसलिए क्योंकि यह घटना चन्द्रप्रभ की जन्मभूमि चन्द्रपुरी वाराणसी में घटित हो रही थी |
5. **अड़तालीस ताले टूटना-** कहा जाता है कि आचार्य मानतुंग ने भक्तामरस्तोत्र के द्वारा अड़तालीस ताले तोड़ दिए थे | इसको भी प्रायः लोग ऐसी की ऐसी ही अभिधा रूप में घटित हुई घटना मानते हैं, किन्तु

वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है | यह भी एक लाक्षणिक प्रयोग ही है | तदनुसार इसका अर्थ कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य मानतुंग ने राजा भोज के दरबार में चल रहे भारी वाद-विवाद को, विविध मताग्रहों को एक सीधा-सरल मोक्षमार्ग दिखाकर हेय सिद्ध कर दिया होगा और इसी बात को जनता ने कहा होगा कि आचार्य मानतुंग ने तो भक्तामरस्तोत्र लिखकर अड़तालीस ताले तोड़ दिए | 48 की संख्या उस समय का एक मुहावरा भी हो सकता है | वैसे ही जैसे कि आजकल 36 का चलता है | कहते हैं कि 36 मत हो रहे हैं | हो सकता है कि इसी बात को उस काल में 48 की संख्या से कहा जाता हो | इस सम्बन्ध में मेरा स्वतंत्र निबन्ध पठनीय है- 'भक्तामर स्तोत्र : एक नया चिन्तन' |

6. **नेमिनाथ की बरात में छप्पन कोटि यादव थे-** यहाँ कोटि शब्द का अर्थ करोड़ नहीं, प्रकार/स्तर है, जिससे तात्पर्य होगा कि नेमिनाथ की बरात में छप्पन प्रकार/स्तर के यादव राजा थे |
7. **रावण के दस सिर होना-** रावण के वास्तव में ही दस सिर नहीं थे, अपितु वह बहुत अधिक अभिमानी था, अत: उसे दस सिर वाला कहा गया | अथवा वह बहुत बुद्धिमान था, अत: उसे दस सिर वाला कहा गया | अथवा उसके गले में दस मणियों एक ऐसा हार था जिसमें उसके दस मुख दिखाई देते थे, अत: उसे दस सिर वाला कहा गया |
8. **रावण का राक्षस होना-** रावण वास्तव में राक्षस नहीं था, मनुष्य ही था, किन्तु उसके वंश का नाम राक्षस था, अत: उसे संकेत में 'राक्षस' कहा जाता था |
9. **हनुमान आदि का वानर होना-** हनुमान आदि भी वास्तव में वानर (बन्दर) नहीं थे, मनुष्य ही थे, हनुमान तो सर्वांग सुन्दर थे, कामदेव थे, किन्तु उनके वंश का नाम वानर था, उनकी ध्वजाओं में वानर का चिह्न था, अत: लोग उन्हें संकेत में 'वानर' कहते थे |
10. **हनुमान का हवा में उड़ना-** हनुमान के पिता नाम पवन या पवनंजय था, अत: उनको पवनसुत या पवनकुमार कहा जाता था और इसी आधार पर उन्हें हवा में उड़ने वाला कहा जाता था | मारुतिनंदन का अर्थ भी पवनसुत या पवनकुमार ही है | उनका अंग (शरीर) वज्र के समान शक्तिशाली था, अत: उन्हें बजरंग बली भी कहते हैं |
11. **पहाड़ उठाकर लाना-** हनुमान सचमुच ही पहाड़ उठाकर नहीं लाये थे, अपितु समय की कमी और परिस्थिति की गम्भीरता को समझते हुए पहाड़ पर उपलब्ध सभी प्रकार की वनस्पतियों को भारी मात्रा में ले आये थे, अत: लोगों ने कहा कि हनुमानजी तो पूरा पहाड़ ही उठा लाये | उसीप्रकार, जिसप्रकार कि यदि हम कभी बहुत अधिक सब्जियां खरीदकर घर ले आते हैं तो पत्नी कहती है कि आज तो पूरी सब्जी मण्डी ही उठा लाये |
12. **सूपनखा की नाक काटना-** राम ने सचमुच सूपनखा की नाक नहीं काटी थी | राम तो भारतीय संस्कृति के उच्च प्रतिमान मर्यादा पुरुषोत्तम थे | वे किसी नारी की नाक कैसे काट सकते थे ? असल में हुआ यह था कि सूपनखा को अपने रूप-सौन्दर्य पर बहुत अधिक गर्व था और वह अपनी सहेलियों से यह वादा करके राम-लक्ष्मण के पास गई थी कि मैं उन्हें वशीभूत कर लूंगी, उसने नाना चेष्टाएँ करके कोशिश भी बहुत की, परन्तु सफल नहीं हो सकी | लौटकर आई तो उसकी सहेलियों ने कहा कि कटवा ली ने नाक |
13. **पत्थर की शिला को स्त्री बना देना-** राम ने सचमुच ही किसी पत्थर की शिला को पैर लगाकर स्त्री नहीं बनाया था, अपितु वे गौतम ऋषि के आश्रम पहुंचे थे, जहाँ उनकी पत्नी अहल्या अपने साथ हुई एक

दुर्घटना को लेकर लम्बे समय से घोर अवसाद (depression) में पड़ी थी | पत्थर की शिला के समान ही हो गई थी | किसी भी प्रकार का कोई भी सुख-दुःख उसे किंचित् भी प्रभावित नहीं करता था | सब लोग बहुत प्रयास करके थक चुके थे | किन्तु राम ने उसे कुछ ऐसी कुशलता से समझाया कि वह अवसाद से बाहर आ गई, नोर्मल हो गई | इसी बात को लोगों ने कहा कि राम ने शिला को स्त्री बना दिया |

14. **सीता की अग्निपरीक्षा होना -** सीता सचमुच ही किसी अग्नि के कुंड में नहीं कूदी थी, न ही राम ने उसे ऐसा कुछ करने की आज्ञा दी थी, न ही उसे ऐसा करते हुए देखने के लिए वहाँ बड़े-बड़े ज्ञानियों की भीड़ जुटी थी | यह सम्भव ही नहीं है | यदि होता तो यह एक घोर अज्ञानतापूर्ण दुष्कृत्य होता | अत: यहाँ अग्निपरीक्षा का अर्थ कठिन परीक्षा ही है, जैसाकि आज भी मुहावरे के रूप में प्रयोग होता है |
15. **अग्नि में कमल खिलना-** सीता की अग्निपरीक्षा के सम्बन्ध में ही यह भी कहा जाता है कि अग्नि में कमल खिल गया था तो यह सभी जानते हैं कि 'कमल' निर्लिप्तता, अनासक्ति या वैराग्य का प्रतीक है | अग्निपरीक्षा के बाद सीता को वैराग्य हो गया था, उन्होंने दीक्षा ले ली थी, अत: लोगों ने कहा कि देखो अग्नि में कमल खिल गया |
16. **सीता का पृथ्वी में समा जाना-** लोग कहते हैं कि अग्निपरीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद सीता पृथ्वी में समा गई थी, परन्तु सीता कोई सचमुच में ही पृथ्वी में नहीं समा गई थी, अपितु उन्होंने एक पृथ्वीमति नाम की महान साध्वी के पास दीक्षा ग्रहण कर ली थी और स्वयं को पूरी तरह उनके पास धर्माराधना में ही समर्पित कर दिया था, अत: लोगों ने कहा कि सीता पृथ्वी में समा गई |